1/11/66 मंगलवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– हमें उन राहों पर चलना है, जहाँ गिरना और संभलना है।

हम हैं वो दिये, औरों के लिए जिन्हें तूफानों में जलना है.....

ओम् शांति ! भारत खास और दुनिया आम, ये जानते ही नहीं हैं कि बेहद का बाप निवृत्ति मार्ग वाला है या प्रवृत्ति मार्ग वाला है। उनको ये मालूम नहीं है कि बाप यहाँ आते हैं तो बच्चे और बच्ची कहकर बुलाना पड़ता है; क्योंकि दिखलाते ही हैं उनको..; उनको कहा भी ऐसे ही जाता है– त्वमेव माता च पिता च बन्धु... तो देखो, गृहस्थी बना देते हैं ना उनको। तो इतना दिन तो ऊपर में निवृत्ति मार्ग में रहते हैं और जब यहाँ आते हैं तो जैसे गृहस्थी मार्ग में चले आते हैं। वहाँ है तो मालूम नहीं है बच्चों को। वहाँ तो सिर्फ ऐसे ही कहते हैं। जानते हैं कि निराकार है। भले उसका आकार है, शिव का; परन्तु उनके कोई बाल–बच्चे तो नहीं हैं। अगर हैं तो बच्चे हैं सभी आत्माएँ। तो इसलिए सभी आत्माएँ हैं एक जैसे। तो समझते हैं कि सभी एक जैसे परमात्मा हैं; क्योंकि सबका एक जैसे ही बिन्दी है रूप। तो बिन्दु रूप आत्मा का भी है तो परमात्मा का भी है। तो गृहस्थी जो गाते आते हैं– त्वमेव माताश्च पिताश्च बन्धुश्च सखा, वो संन्यासी नहीं मानते हैं निवृत्ति मार्ग वाले। वो तो ....ब्रह्म। अभी ब्रह्म तो कोई प्रवृत्ति मार्ग का होता ही नहीं है। ब्रह्म तो है ही ब्रह्म महतत्व, रहने का स्थान। उनको ये मालूम ही नहीं है। अभी वो इनको नहीं कहेंगे– त्वमेव माताश्च पिताश्च बंधुश्च सखा, कहेंगे ही नहीं। कि ब्रह्म को कोई माता–पिता, बंधु, सखा तो कहेंगे ही नहीं। तो देखो, उनका मार्ग ही अलग है बिल्कुल ही। जो गृहस्थी मार्ग में हैं, प्रवृत्ति मार्ग में हैं, वो ये सभी कहते हैं, उनकी महिमा करते हैं सभी मंदिर में, भले भूल के कारण इनको भी जाकर कहेंगे– त्वमेव माताश्च पिताश्च बंधुश्च सखा वा इनको भी जाकर कहेंगे–अच्युतं केशवं श्री राम नारायण, कृष्ण दामोदरम् श्रीवासुदेवम् हरि। अभी इनका अर्थ–वर्थ तो कुछ वो समझते ही नहीं हैं; क्योंकि भक्तिमार्ग में अथाह है गायन। स्तुतियाँ भी अथाह हैं...। बहुत स्तुति है। यहाँ तो बाबा है और उनका वर्सा मिलता है और बाकी क्या महिमा है? बाप की महिमा बच्चे के आगे क्या है। बाबा है, हम उसके बच्चे हैं और ये बाबा से हमको वर्सा मिलना है। बाबा है ना। अभी ये भी कोई को पता नहीं है कि बाबा से कोई वर्सा मिलता है। तो बच्चे, ये नई बात होने के कारण, कोई भी नहीं, कोई के भी बुद्धि में नहीं समझ में आता है और आएगा उनके ही जिन्होंने कल्प पहले आय करके (...) और बच्चे बने हैं। तो अभी तुम बैठे हो यहाँ, ये जानते हो कि दादा भी है, मम्मा भी है, बाबा भी है, कि बड़ी मम्मा भी है ना बच्ची ये। माताश्च पिता, तो ये पिता भी है, प्रजापिता भी है और ये बड़ी मम्मा भी है; क्योंकि इन्हों द्वारा ये इनको कहते हैं– हे बच्चियाँ, हे बच्चे। नहीं तो है तो बच्चे सिर्फ कहने वाला; परन्तु जब यहाँ आते हैं तब इनमें प्रवेश करते हैं। तो बाप कहते हैं कि मैं तुम्हारा अभी बाबा तो हूँ ही; परन्तु मुझे प्रवृत्ति मार्ग में आना पड़ता है। तो मैं जब इनमें प्रवेश करता हूँ तो देखो ये मेरी युगल भी हो जाती है और बच्चा भी है; क्योंकि ये भी तो बाबा कहते हैं। तो जब यहाँ आता हूँ तो; क्योंकि है ही प्रवृत्ति मार्ग। तो हम बैठ करके बच्चों को इन द्वारा बाप भी बना हुआ हूँ, तो देखो टीचर भी बना हुआ हूँ, प्रवृत्ति मार्ग कितना (...); परन्तु इसका है वण्डरफुल प्रवृत्ति मार्ग कि बाबा भी खुद ही बनते हैं, तो टीचर भी खुद ही बनते हैं, सो गुरू भी, सो भी सच्चा। इनको कहा ही जाता है–सत् गुरू, सुप्रीम। उसको कहा ही जाता है अंग्रेजी में–सुप्रीम। सुप्रीम गाइड। गाइड कहा जाता है गुरू को और गुरू को गाइड करना है कहाँ के लिए? मुक्तिधाम के लिए। अभी और तो हैं झूठे; ये है सच्चा। इसका नाम ही है–सत्य, ट्रूथ। अंग्रेजी में कहते ही हैं भगवान को–ट्रूथ। अभी ट्रूथ जब बोलते हैं कि वो ट्रूथ है, तो क्या ऐसे ही ट्रूथ है, वहाँ क्या करते होंगे ट्रूथ, वहाँ क्या, वहाँ तो बोलने की भी बात नहीं। ट्रूथ

कहाँ बताते हैं? समझाना चाहिए ना, ट्रूथ कहाँ आ करके बताते हैं, सत्य क्या आकर बताते हैं। तो बच्चों को इन सब बातों का कुछ भी पता नहीं है। जैसे हम–तुम को भी पता नहीं था। तो जैसे नई बात हो जाती है ना बच्चे। कहते तो सब कुछ हैं–ज्ञान का सागर है, ट्रूथ है, सच बोलने वाला है, सचखण्ड स्थापन करने वाला– ऐसे भी ग्रंथ में गाया हुआ है; परन्तु गाया हुआ है ना, होकर गया है, ऐसे कहेंगे। शिव जयन्ती मनाते हैं ना बच्ची। होकर गया है, सच बता कर गया है। सच बताकर गया है तो क्या हुआ है, बरोबर सचखण्ड की स्थापन करके गए हैं। अभी सचखण्ड को तो स्वर्ग ही कहते हैं, सचखण्ड को ही तो हैविन कहते हैं, पैराडाइज़ कहते हैं। सचखण्ड में ही डीटी सॉवरण्टी दिखलाते हैं, पहले–2 नए खण्ड में, नई दुनिया में। तो अब तो पुरानी है। तो वो ज़रूर है कि पुरानी से नई होती है और ये बाबा ने बार–2 अच्छी तरह से समझाया है कि पुरानी दुनिया को जब आग लगती है या विनाश होता है, डिस्ट्रक्ट होता है; वो तो गाया हुआ है कि स्थापना जब होती है तो डिस्ट्रक्ट(डिस्टक्शन) भी होता है। तो वो तो तीन मूर्ति के लिए गाया है बरोबर स्थापना, करन–करावनहार है। तो करन–करावनहार है तो कराएगा किससे? तो बरोबर गाया भी जाता है– ब्रह्मा द्वारा स्थापना कराते हैं। अभी कैसे कराते हैं? अभी कृष्ण की तो बात ही उठ जाती है बिल्कुल ही। कैसे कराते हैं, वो खुद बताएगा ना। मनुष्य नहीं जानते हैं ना कुछ भी– करन–करावनहार है, ईश्वर को कहा जाता है; पर कब–कैसे करन–करावनहार है? कब आ करके किससे कराते हैं और खुद भी करते हैं? तो ये तो किसको (भी) मालूम नहीं है। जबकि आ करके बच्चों को ये समझावे, वो समझ जावें। अभी तुम बच्चे जानते हो कि बाबा करन–करावनहार है और फिर तुम बच्चों को ये ड्रामा का पता पड़ गया है अच्छी तरह से। मूल बात तो ये है। ड्रामा तो किसको मालूम ही नहीं है, कुछ को, ये ड्रामा है और रिपीट होता है। अगर कोई को मालूम हो कि ये ड्रामा रिपीट होता है, कहते भी हैं बरोबर कि ये सत–त्रेता–द्वापर–कलहयुग, सत–त्रेता–द्वापर–कलहयुग–संगमयुग और इस संगमयुग को ही ऊँच मानना चाहिए; क्योंकि अगर बुद्धि से बैठ करके काम करे कि भई सत,त्रेता,द्वापर,कलहयुग, पीछे आना है सतयुग, तो वो तो उतरती हुई। जब कलहयुग का अंत होता है, फिर सतयुग की आदि, तो फिर स्वर्ग होना चाहिए। तो स्वर्ग तो उतरते जाते हैं, ताकि नर्क ज़रूर बनना है, उतरना भी ज़रूर है। स्वर्ग और नर्क, हेल एण्ड हैविन– ये तो गाया ही हुआ है बरोबर। खुद भी मनुष्य रोज़ ये मरते हैं तो भारत में गाते हैं कि भई ये स्वर्गवासी हुआ, वैकुण्ठ वासी हुआ। तो ज़रूर कोई समय में वैकुण्ठ वासी भी हुए हैं, स्वर्गवासी भी हुए हैं और बाबा ने समझाया है कि 'स्वर्गवासी हुए हैं, वैकुण्ठवासी हुए', सिर्फ भारत में ही कहते हैं। वो बिचारे जानते हैं कि हैविनली गॉड फादर हैविन स्थापन करते हैं। उसमें कौन होते हैं? वो भी बहुत कई जानते हैं कि बरोबर ये भारत सबसे प्राचीन है, यही हैविन होगा और इसको पैराडाइज़ भी मानते हैं बरोबर कि क्राइस्ट के 3000 (वर्ष) पहले ये पैराडाइज़ यहाँ था। यहाँ कहाँ था? ये तो भारत में ही होगा ना। वो प्राचीन भारत है। तो देखो, बातें बहुत सहज–2 हैं; परन्तु पत्थर बुद्धि होने के कारण ड्रामा के प्लैन अनुसार बाप को आ करके ये सब कुछ बताना है। तो नहीं जानते हैं। नहीं जानते हैं तभी तो आ करके बाप को बताना पड़ता ना। अगर कोई जानते होते तो बाप क्यों आवे यहाँ बताने के लिए! परन्तु ड्रामा में ये है कि पुकारते हैं उनको कि आओ, आ करके हमको, ये जो तुम्हारे में नॉलेज है, देखो नॉलेजफुल कहा जाता है, तो नॉलेज है आपमें, वो भी आ करके हमको दिओ। सिर्फ ऐसे नहीं कहना है कि हे पतित को पावन बनाने के लिए आओ। हे पतित–पावन, आओ। नहीं, पर हे नॉलेजफुल! आपमें क्या नॉलेज है, वो भी तो आ करके बताओ। वो भी तो साथ में

होना चाहिए ना। अच्छा, ये भी कहते हैं– पतित–पावन, फिर नॉलेज भी कहते हैं, फिर और भी कहते हैं कि हमारा दुःख हरो, सुख दिओ। ये भी उनको मालूम नहीं है कि सुख कौन–सा देंगे, कहाँ के लिए देंगे, कैसे देंगे, किसको मालूम नहीं है, क्या करेंगे? तो अभी तुम बच्चे जानते हो ना। तुम बच्चों को ही बैठ करके पढ़ाया है। तो अभी इस समय में और ये भी समझना चाहिए– देखो बाबा है, भगवान माना बाबा, फादर; फादर अगर है तो ये ज़रूर पक्का है कि फादर से क्रियेशन हुई होंगी। फादर माना क्रियेशन। कोई भी होगा जिसका बच्चा होगा ना, फादर कहा ना तो ज़रूर क्रियेशन तो ज़रूर होंगी, नहीं तो फादर किसको कहें! मनुष्य किसको तो फादर कहें, कहाँ से तो पैदा हुआ होगा ना! तो फादर है तो मदर भी है, क्रियेशन भी हैं और जब मदर, फादर, क्रियेशन हैं, तो ज़रूर उनके लिए प्रॉपर्टी भी होगी ज़रूर। तो ये तो बिल्कुल एक कॉमन बात है। तो बरोबर उस फादर है, मदर है, चिल्ड्रेन होगा ज़रूर और कहते भी हैं–ओ फादर! तो यहाँ तो क्लीयर गाते हैं–तुम मात–पिता, हम बालक तेरे। तो गृहस्थी कहलाते हैं ना उनको। तो निराकार कब आ करके गृहस्थी बनते हैं? वो बुलाते हैं ना–आओ! आ करके हम पतितों को पावन करो– हे मात–पिता! अरे पर, वो तो फादर है ना। अब फादर है; परन्तु मदर बिगर क्रियेशन कैसे हो सकती है! तो देखो, क्रियेशन कैसे होती है! ये नई बात है ना। किसके बुद्धि में आएगा ही नहीं। यहाँ ही किसके बुद्धि में अच्छी तरह से ठहरती नहीं। ऐसी ठहरती नहीं, समझाय नहीं सकते हैं कि क्रियेशन वो कैसे करते हैं। फादर कहते हैं और फिर यहाँ– तुम मात–पिता, हम बालक तेरे, और–2 सभी जगह में 'फादर' कहते हैं। भला, फादर कहते हैं तभी मदर ज़रूर चाहिए जो चिल्ड्रेन होवे। तो वो कैसे वो रचते हैं प्रवृत्ति, वो तो किसको पता ही नहीं रहता है। प्रवृत्ति तो है रची हुई ज़रूर, तभी तो गाते हैं– ओ गॉड फादर। परन्तु बुलाते हैं; क्योंकि दुःखी हैं। ओ फादर, आओ यहाँ। आओ फादर, आ करके हमको इस दुःख से लिबरेट करो। अभी वहाँ कहते हैं फादर। यहाँ कहते हैं फादर एण्ड मदर। तो देखो, यहाँ फादर–मदर कहने वाले को, सो तो वर्सा मिल जाता है और वो जो सिर्फ फादर कहते हैं, उनको ये स्वर्ग का वर्सा तो मिलता नहीं है, उनको फिर मिलता है शांति का वर्सा। नहीं तो एक है तो सभी को जीवनमुक्ति का वर्सा। जीवन को मुक्त तो कर देते हैं। पीछे ड्रामा में है कि वो पीछे आते हैं यहाँ फलाने–2 टाइम में। अभी ये भी तो सबको मालूम भी तो है कि भई क्रिश्चियन धर्म तो जब था, उनके आगे क्या था? भई कहेगा– बौद्धी धर्म था। भई उनके आगे क्या था? भई इस्लामी धर्म था। अच्छा, फिर उसके आगे क्या था? तुम लोगों को जब समझाना होता है ना तो ऐसा समझाएगा; इसमें ऐसा समझाओ या ऐसे समझाओ। सीढ़ी में, ये जो आते हैं ये इस्लामी,बौद्धी,क्रिश्चियन, ये नहीं हैं ना, तो इसलिए सीढ़ी इसके साथ में रखना है समझाने के समय में; क्योंकि यहाँ भी सतयुग ऊपर में दिखलाते हैं, यहाँ भी सतयुग ऊपर में दिखलाते हैं। वहाँ भी लक्ष्मी–नारायण का राज्य दिखलाते, वहाँ भी दिखलाते हैं यहाँ। तो ये तो समझाया जाता है ना अच्छी तरह से कि देखो, ये कलहयुग अभी है, पीछे सतयुग है, उनमें मनुष्य ही कितने होंगे, देखो लगे हुए हैं ना 9 लाख। तो वहाँ भी तो लिख देना चाहिए ना– 9 लाख। तो सतयुग के आदि में लिखना चाहिए– 9 लाख। सतयुग के अंत में, त्रेता के आगे तो बहुत हो जाएगा ना। तो लिखत में भी करेक्शन चाहिए अच्छी तरह से। ब्रेन चाहिए, बुद्धि चाहिए कुछ। तो बुद्धि का भी तो बाप देते हैं ना। पत्थर बुद्धि को पारस बुद्धि बनाने वाला। तो पत्थर बुद्धि तो भूलें ही करते रहते हैं ना। तो बाप फिर करेक्ट करते रहते हैं कि ये भी तुम लोग ने भूल करते हो। बाबा ने कहा, लिख दो इसमें– कलहयुग के अंत की आयु है 500 करोड़, तो कलहयुग के आदि में लिखना है क्या?

कलहयुग के अंत में लिखनी चाहिए, ये तो कोई छोटा बेबी भी समझ जाए। जब कलहयुग के अंत और सतयुग की आदि का ही हम बैठ करके सारा ये इतना वृतान्त समझाते हैं। इसलिए ये चित्र हैं। देखो, पाठशाला है ना बच्चे। पाठशाला में कोई एक किताब होगा क्या गीता का? पाठशाला में इतना बड़ा इम्तहान, देखो, कितना बड़ा भारी इम्तहान है इस पाठशाला में, गीता के पाठशाला में। उन्होंने तो सिर्फ दो अक्षर ये बनाकर डाल दी। ये सभी चित्र तो तुम देखते हो ना। क्या वहाँ लिखा हुआ है कि हम ये चित्र सब इतने बनाए थे? तो जबकि पाठशाला है, पाठशाला में तो मैप्स भी चाहिए। अभी मैप्स तो वो तो काम में नहीं आएँगे जिस्मानी नॉलेज के। देखो ये रूहानी नॉलेज के कैसे फिर मैप्स निकले हैं। मैप्स से मनुष्य जल्दी समझते हैं; ओरली बहुत मुश्किल समझते हैं। तो तुम देखते हो कि फर्क है, बरोबर बच्चे भी कहते हैं– बाबा, इन मैप्स से, हमको दो, इनसे हमको बहुत अच्छा समझाने में आता है। तो जबसे मैप्स बनते हैं सब मैप्स माँगते रहते हैं। उसमें भी मुख्य तो मैप्स हैं ही जिसमें भी सारा राज़ है। फिर भी अच्छी तरह से विस्तार से समझाने के लिए देखा जाता है कि इन दो चित्रों से काम नहीं होते हैं, बहुत पत्थर बुद्धि हैं, इसलिए इनको और ही बहुत–3 चित्र कन्ट्रास्ट वगैरह का (...) तो आपे ही समझें। उनको समझाया जाए कि भई, शिव और शंकर; अभी शिव का स्थान ही ऊपर में है, वो तो निराकार है और फिर जो आकार वाला, उसका स्थान ऊपर में भी नहीं होगा। वो तुम उनको शिव–शंकर को इकट्ठा क्यों करते हो? उनका पार्ट ही अलग है, उनकी महिमा ही अलग है। उनको कहा ही जाता है–शंकर देवता; उनको कहा जाता है–भगवान। तो चित्र है तो समझाने से जास्ती समझते हैं, ये बहुत अच्छी तरह से। अभी अच्छी तरह से चित्रों से समझाया गया हुआ है। ये समझते हैं। बहुत कोई–2 अच्छे भी कहते हैं। ये तो बाप ने समझाया ना बच्ची। कई तो आएँगे, बंदरों के मिसल कुछ भी नहीं समझेंगे। हाँ, बहुत अच्छा है। बस, ऐसे ही देख करके, कुछ भी बुद्धि में नहीं बैठेगा, ज़रा भी, एक अक्षर भी नहीं बैठेगा। अभी वो तो प्रजा में नहीं आएगा ना। जो बैठ करके समझने की कोशिश करेंगे, उनको समझाएँगे, तो उनकी बुद्धि में बैठे, जो वो कह सके कि हम फिर आ करके और समझेंगे। बस ये है वही ऐसा ही, जैसे कि ये गर्भ से बाहर निकलते हैं ना, फिर पाप करने लग पड़ते हैं। तो ये भी ऐसे ही, यहाँ से आ कर–करके कोई तो आ करके पाप कम करते हैं और कोई तो आकर फिर भी पाप करते हैं, उसको कहा ही जाता है–जेल बर्ड। तो जो जेल बर्ड होंगे ना, तो यहाँ आ करके जैसे बंदरों के माफिक ये समझ–2 करके चले जाएँगे। कोई होगा– बहुत अच्छा, आपकी समझानी बहुत अच्छी। उनकी बुद्धि में बैठते, उनका फीचर्स देखना होगा। जब प्रोजेक्टर में तुम समझाते हो तो किसका भी फीचर्स नहीं समझ सकेंगे– समझता है, नहीं समझता है, कोई भी पता नहीं पड़ता है। अच्छा, फिर क्या करेंगे, उनसे पूछेंगे कैसे? ये तो घड़ी–2 समझाना पड़े एक–2 चीज़ के ऊपर। तो तभी बाबा ने कहा– अगर उनमें भी समझाना है, तो पहले–2 तो एक ही चित्र में, त्रिमूर्ति के ऊपर ही सारा समझाना पड़े अच्छी तरह से। ये भाई, ये तुम्हारा बाबा है। ये तो बहुत क्लीयर है एकदम। वो तुम्हारा बाबा है, ये तुम्हारा दादा है।..इसको तो भगवान कहा ही नहीं जाता है और वो बाबा निराकार है। उनके पास अपना शरीर तो है नहीं। तो भला ज्ञान कैसे देवे जबकि वो ज्ञान का सागर है, पतित–पावन है? उनकी इतनी बड़ी महिमा होती है। तो भला आय करके वो वर्सा कैसे देवे अर्थात् यहाँ भारत में आ करके वा भारत को ही देते हैं, देखो तो। धर्म भी तीनों यहाँ स्थापन होते हैं। देखो, ब्राह्मण धर्म स्थापन होते हैं, अभी गाया भी जाता है कि परमपिता परमात्मा ब्राह्मण, देवी–देवता और क्षत्रिय धर्म की स्थापना करते हैं। अभी कृष्ण के लिए है नहीं कभी ये

गायन। ये परमात्मा के लिए कि परमात्मा (...), है कोई शास्त्र में कि ब्राह्मण, देवी–देवता और क्षत्रिय धर्म। अभी तुम बच्चे जानते हो कि अभी ब्राह्मण धर्म कौन स्थापन करे; क्योंकि ब्रह्मा तो ज़रूर चाहिए ना। तो ब्राह्मण धर्म तो ज़रूर स्थापना होना चाहिए ना; क्योंकि ये यज्ञ है फिर भी, जिसमें ये सारी दुनिया स्वाहा होनी है। तो जबकि यज्ञ है, गुरू चाहिए। तो गुरू भी है तो यज्ञ भी तो ज़रूर चाहिए; क्योंकि ये भी तो यज्ञ है ना। इसको कहा ही जाता है–रूद्र ज्ञान यज्ञ। अभी..इसको यज्ञ भी क्यों कहते हैं? क्योंकि इनमें आहुति आने की है सभीऽऽऽ। बड़ा यज्ञ है फिर। इसको ही कहा जाता है–अंतिम यज्ञ। इस यज्ञ के पिछाड़ी में और सतयुग और त्रेता में, द्वापर में भी (...); क्योंकि यज्ञ पीछे शुरू होते हैं, बहुत देरी से होते हैं; क्योंकि पहले तो पूजा होती है ना। अविनाशी यज्ञ की पूजा करना माना प्रकृति की पूजा करना। वो तो बहुत देरी से शुरू होते हैं, यज्ञ कोई शुरू में नहीं होते हैं। पहले शुरू ही होती है शिवबाबा की पूजा, जिसको अव्यभिचारी पूजा। अगर यज्ञ तो फिर व्यभिचारी हो जाती है। तो पहले–2 तो कोई यज्ञ नहीं होता है, बच्चे। पहले सतयुग, पहले शिव की पूजा, पीछे सेकण्ड नबंर में है देवी–देवताओं की पूजा; क्योंकि देवी–देवताओं की पूजा, विष्णु की या उनकी, वो जो देवी–देवताओं की पूजा है सो ही तुम्हारी पूजा है जैसे; क्योंकि तुम्हारी पूजा नहीं हो सकती है। तुम्हारा गायन है सिर्फ। तो गायन के लिए तो चित्र की दरकार ही नहीं; क्योंकि पूजने के लिए (...)। कोई भी जाएगा चित्रों के आगे ना, तो जा करके पूजा करेगा। तो पूजा तो देवताओं की होती है, तुम्हारी नहीं होनी है; परन्तु ये अज्ञान कारण ये आदिदेव और आदिदेवी, उनके ऊपर भी फूल–वूल जाकर चढ़ाते हैं। नहीं तो वास्तव में लॉ नहीं कहता है। ये बहुत महीन लॉ है। तुम पूजने लायक नहीं बनते हो; क्योंकि यहाँ ब्राह्मण हो ना। अभी तुम्हारा, भले आत्मा प्योर होती जाती है, पर शरीर जो है, पूजने लायक नहीं है और पूजा करते हैं शरीर की बैठ करके। ...तिलक वगैरह शरीर को लगाते हैं। तो शरीर तो इसका ही है पूजने लायक। एक तो शिवबाबा तो है ही है। गायन लायक भी है, तो पूजने लायक भी है। तुम गायन लायक हो, फिर पूजने लायक नहीं हो; क्योंकि पवित्र नहीं हो। शिवबाबा तो गायन लायक भी है, तो पूजने लायक भी है। उनकी महिमा भी है, तो वो पूजा भी जाता है सबसे जास्ती। है भी निराकार, फिर भी पूजा करते हैं देखो और क्या चढ़ाते हैं, उनका अर्थ तो समझते ही नहीं हैं बिचारे। कोई फूल चढ़ाते हैं...। अरे भला, अच्छा श्रीकृष्ण को तो बैठ करके वो चढ़ाते हो, भला इनको बैठ करके अक–धतूरे क्यों चढ़ाते हो, किस्म–2 के फूल? तो इनका भी बाप ने बैठ करके अच्छा अर्थ बनाया कि मैं देखो इस काँटो से (...), तो कोई फूल बनते हैं, कोई सदागुलाब बनते हैं, कोई गुलाब बनते हैं, कोई मोतिया बनते हैं, कोई चम्पा बनती है, अनेक हैं ना फूल। तो बरोबर ये अनेक बनते जाते हैं, वो तहाँ कि जा करके रतनजोत भी बनते हैं और तो फिर अक के फूल भी बनते हैं, लास्ट में। तो अक के फूल फिर किसको कहेंगे? तो बरोबर अक के भी काँटे से, नहीं पढ़ने के कारण वो अक के फूल जैसे उसको। उनको कोई काम के नहीं एकदम। बच्चे तो बनते हैं ना। तो पढ़ते हैं तो कोई फूल बनते हैं, कोई अक के अक रह ही जाते हैं एकदम, टाट्टू के टाट्टू एकदम। तो इसलिए वो पूजा उन पर ऐसे होती है। तो इनके ऊपर, अक के बच्चे जो इनके ऊपर फिदा होते हैं या इनके बनते हैं, इनके ऊपर चढ़ते हैं ना ये। शिवबाबा के ऊपर आ करके ये सभी काँटे चढ़ते हैं यानी उनके बनते हैं। ये बैठ करके उनको फिर फूल बनाने की कोशिश करते हैं, पुरुषार्थ कराते हैं। तो देखो, कोई फूल बनते हैं, कोई कैसा बनते, कोई कैसा, तो वैराइटी होती है ना। तो बगीचे में भी जाओ तो वैराइटी देखेंगे। तो वो है फूलों की वैराइटी। फिर सतयुग में भी ऐसे ही फूलों की वैराइटी। फिर देखो कोई (...)। जभी

भोजन भी खाते हैं, तभी भी ब्रह्मा भोजन का बड़ी महिमा से गाते हैं। वो संस्कृत एक श्लोक है– ब्रह्मा भोजन ब्रह्मास्मि, ब्रह्माओपी, ये ब्रह्म–2 करते रहते हैं। महिमा गुप्त, पता नहीं है; क्योंकि भक्ति जो भी होती है, महिमा जो भी होती है, जिसकी भी होती है, सब फालतू होती है। जानते तो कुछ भी नहीं हैं। तो वो भी बिचारे ब्राह्मण जानते तो नहीं हैं कि हम ब्राह्मण कैसे ठहरे? ब्रह्मा तो पहले चाहिए, जिससे बाप भगवान सृष्टि रचते हैं। ब्राह्मण तो हुए होने चाहिए पहले। तो देखो, पहले ब्राह्मण हो ही तुम और ब्राह्मण पहले वाले, चोटी वाले पहले ब्राह्मण। तो चोटी भी तो दिखलाते हैं ना बच्चे। तो देखो, वहाँ ब्राह्मण दिखलाते ही नहीं। ब्राह्मण कहाँ भी नहीं दिखलाते हैं। देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, ब्राह्मण दिखलाते कहाँ हैं! विराट रूप जब बनाते हैं उसमें चोटी ब्राह्मणों की दिखलाते ही नहीं हैं। तो फिर ब्राह्मण जो कहते हैं हम ब्रह्मा के मुख से (..), आए कहाँ से? देखो उनको भी, तुम ब्राह्मण को उठाओ ना, तो भी ब्राह्मण बहुत उठ सकते हैं कि तुम ब्राह्मण अपन को जो कहलाते हो सो कौन–से ब्राह्मण? ब्रह्मा जब आवे, रचना रचती है नई, बाप आकर ब्रह्मा द्वारा पहले ब्राह्मण, सो देवता बनते हैं। ब्राह्मण सो देवता कैसे बनते हैं? वो भी तो समझने की बात है ना। ब्राह्मण हो गए संगमयुग के और कलहयुग के हैं शूद्र। सो शूद्र ब्राह्मण कैसे बनते हैं, ब्राह्मण तो चाहिए ना ज़रूर, चोटी तो ज़रूर चाहिए ब्राह्मणों की, जिनके लिए वो ब्राह्मण देवी–दवताएँ इस ब्राह्मणों की महिमा करते हैं, ब्राह्मणों के भोजन की बड़ी महिमा करते हैं। तो ऐसे भी नहीं, ब्राह्मण जब बैठ करके भोजन पाते हैं .....ब्रह्मा भोजन, तो कोई सिर्फ ब्रह्मा को याद करते होंगे, शिव को तो याद नहीं करते होंगे। उनको ये मालूम ही नहीं है, कुछ ज्ञान का। तो कितनी–2 बहुत बातें हैं। देखो है तो थोड़ा ना, बाप आ करके समझाते हैं– अलफ और बे। पीछे ये डिटेल; क्योंकि भक्ति का भी तो समझाना पड़े ना– तो भक्ति में ये सब क्या–2 करते हैं। उनको कुछ भक्ति में तो मालूम ही नहीं रहता ना। भक्ति हुआ भगत। बाबा नहीं कहते हैं– अगर मैं किसको कहता हूँ– तुम तो भगत हो यानी तुम तो दुर्गति को पाए हुए हो। तो बाबा और गुस्सा नहीं करते हैं, बाबा जब गुस्सा करते हैं तो भी इतना करते हैं– तुम तो भगत हो कोई। बस। जो तुमको कितनी बड़ी–2 बड़ी लम्बी–चौड़ी गाली मिल गई एकदम यानी तुम दुर्गति को पाए हुए हो। ये क्यों बाबा कहते हैं? कि नहीं कोई वो मानते हैं कोई बात, तो कह देते हैं– तुम तो बुद्धू हो, तुम तो भगत हो। तुम मानते ही नहीं। भगवान की नहीं मानते हो, हाँ। तो भगवान की नहीं मानते हो तो फिर बुद्धू हुआ ना। भगवान की भला कोई न मानेंगे तो उनको बुद्धू कहेंगे ना। तो बाबा यहाँ भी तो ऐसे ही कहते हैं ना। 'बुद्धू' अक्षर बाबा बहुत काम में ले आते हैं। तुम तो बुद्धू, भगवान बैठ करके तुमको समझाते हैं, ऊँचे–ते–ऊँचा भगवत्, वो तुमको बैठकर समझाते हैं, इतने बुद्धू हो गए हो– बुद्धू, पत्थर बुद्धि को भी कहा जाता– अरे, समझते ही नहीं हो; क्योंकि वो जो कुछ भी (...), बाप है ना फिर भी। किसका? बच्चे का। अगर समझो चिट्ठियाँ (...), बच्चा कोई भूल कर देते हैं, तो किसका नाम बदनाम होगा? शिवबाबा का। तो शिवबाबा उस, जो इनके द्वारा कोई भी बात हुई और कुछ समझो उल्टी–सुल्टी हो गई, तो ड्रामा के प्लैन अनुसार वो सुलझाने के लिए भी वो बाँधेला है। नहीं तो बोलेगा– हमारा मुरब्बी बच्चा, उनसे भूल होती है, तो फिर औरों से भी बहुत भूल...। तो ड्रामा में ये नूँध है कि अगर इनसे कोई भूल भी होगी, तो भूल भी, उनमें से भी फायदा निकल आएगा। समझा ना! हाँ, नहीं तो बाप की आबरू जाती है; क्योंकि बड़ा बच्चा है ना। तो सारा मदार ही है इनके ऊपर। तो इसलिए भले ये कुछ भी कहते हैं– अरे, ये करो। वो समझते हैं कि ये करेगा तो नुकसान (...)। ना,ना,ना,ना। कहा है ना, कर दो। वो नुकसान से फायदा निकल आएगा। तुम क्यों ये

समझते हो कि नुकसान होगा। नुकसान की तो कोई बात ही नहीं है। हर बात में कल्याण ही कल्याण है। देखा भी जाता है, कोई भी चीज़, कुछ पास्ट हो जाता है, देखते हैं– देखो, कल्याण ही हो गया। इस बात से भी कल्याण ही हो गया। कोई नुकसान तो नहीं है। सो भी ड्रामा में था फिर। फिर ये भी कह देते हैं– ये भी तो ड्रामा में था ना कि अगर अकल्याण भी हुआ है सो भी तो ड्रामा था। फिर भी तो देखो कल्याण तो होना ही ना। अंत में कल्याण तो होना ही है ना। कोई भी हालत में, कुछ भी; क्योंकि है ही कल्याणकारी। तो ये तो ज़रूर है कि माया के द्वारा भूलें तो होती रहती होंगी, सब बच्चों की, इनकी भी। समझा ना! परन्तु बाबा बैठे हैं ना। वो तो है ही कल्याणकारी, तो सबका कल्याण ही कर देंगे। देखो, ये लड़ाइयाँ लगती हैं, जो मारते,पीटते,कूटते रहते हैं। क्या कर रहे हैं– चोरी–चकारी वगैरह, देखो कितनी गंद है एकदम। तो बाप क्या करते हैं? बाप तो फिर भी आकर कल्याण करते हैं ना सबका, सबको सद्गति देते हैं ना। ये ज़रूर है कि सद्गति जो देते हैं; परन्तु जो कुछ भी वो पाप कर्म करते हैं, उनका हिसाब–किताब गुप्त, वो भी गुप्त। देखो, किसको मालूम थोड़े ही होता है। जब गाया जाता है– बाप है सर्व का सद्गति दाता, उसमें सब आ गया, सारी सृष्टि आ गई। फिर, तो गत है ना; परन्तु बाकी जो डिटेल में है कि जो पाप जिसके ऊपर सिर पर है, उसका क्या हिसाब...? सो तो गाया हुआ है कि ये कयामत का समय है, सब अपना हिसाब–किताब चुक्तू करके, कल्याण सबका होता है। कल्याण तो होना ही है ना बच्ची। देखो, पाप करते हैं मनुष्य, उसको भोगना भोगनी पड़ती है। फिर भोगना भोग करके, फिर भी तो कल्याण हो जाता है ना। बीमारी सहन करके फिर अच्छे हो जाते हैं; क्योंकि पाप का वो हिसाब–किताब चुक्तू करके फिर भी तो अच्छा हो जाते हैं। तो ये भी जो पाप है सिर के ऊपर, इतने के ऊपर बहुत ही, तो ज़रूर उनका कुछ तो हिसाब मिलता होगा ना। तो बाप ने समझाया बहुत कि ये जो सज़ा मिलती है, वो बच्ची बहुत ही एक, जब सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिलती है, तो सेकेण्ड में क्या वो पाप नहीं सबको भोगाय सकते हैं चक्री में? तो ये समझाया बाप ने कि जैसे काशी कलवट खाते हैं, तो बस शरीर छोड़ दिया ना। पीछे क्या वो कोई शिवबाबा से जाकर मिला? नहीं, बाप कहते हैं– वो जो उनका पाप का बोझा है, उनका हिसाब–किताब चुक्तू कराए करके, फिर दूसरा जन्म में फिर शुरू हो जाते हैं इनके पाप नए सिर। वो इतना जो बोझा है, वो ख़तम हो गया उनका। तो बोझा तो भोगना है ना। समझो कोई ने बीच में अपना ऐसे काशी कलवट खाया है। अच्छा, पास्ट का, फिर भी तो शुरू तो हो जाता, वापस तो कोई नहीं जा सकते हैं ना। काशी कलवट खाकर मरे या कुछ भी करे, वापस कोई जा ही नहीं सकते हैं। मनुष्य तो यहाँ बहुत ही समझते हैं, ये संन्यासी–उदासी वगैरह–2, ये सत् पुरुष था, बहुत उत्तम पुरुष था, इनको कोई जन्म थोड़े ही मिलेंगे। ना। तो इतना कितना समझने का है ना बच्चे। तो देखो, बाप कहते भी हैं–ज्ञान सेकेण्ड का है, जीवनमुक्ति सेकेण्ड की है, फिर भी कितना समझाते रहते हैं। पढ़ाई है ना फिर भी स्कूल की। रोज़ पढ़ाते रहते हैं, रोज़ पढ़ाते रहते हैं। अच्छा, पढ़ाते रहते हैं जो शिवबाबा, वो तो पढ़ाई उनकी आत्मा में नूँध है ना। जो नूँध है वही तो वो जा करके पढ़ाएँगे ना, कोई नई चीज़ तो नहीं पढ़ाएँगे। जैसे–2 कल्प पहले पढ़ाया था रोज़ाना वो ऐसे ही पढ़ाते रहते हैं; क्योंकि ड्रामा में नूँध है। उसमें पहले ही से नूँध पड़ी हुई है। जो कुछ बोलता रहेगा, वो गोया जैसे कि इसकी आत्मा में नूँध है, वो बोलता रहता है। तो ये भी तो समझने की बात है ना। जब बाबा की आत्मा में इतना सारा ज्ञान का सागर है, सो शुरू से ले करके आने से ही। कोई ऐसे तो नहीं कि आने से कोई पालना ली है। यानी पालना तो उनको लेनी नहीं है ना; क्योंकि अभोक्ता है।

कृष्ण तो भोक्ता है ना। तो भगवान किसको कहें– भोक्ता को कहें (या) अभोक्ता को कहें? तो कितनी बातें समझानी होती हैं; परन्तु जो बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि, जिनको ये समझना ही नहीं है, जो स्वर्ग में आने का नहीं है, सो तो ज़रूर विघ्न डालेंगे ना। तो इसलिए विघ्न इस ज्ञान में बहुत पड़ते हैं। इसलिए आने से ही कह देते हैं– बच्चों, इस ज्ञान में विघ्न बहुत पड़ेंगे और उसमें भी, ज्ञान में भी विघ्न पड़ेंगे, यज्ञ में भी विघ्न पड़ेंगे, अबलाओं के ऊपर अत्याचार भी होंगे। क्यों? कामेषु, क्रोधेषु, मार खाएँगे। सो देखो, सब कुछ हो रहा है और बच्चे समझते भी हैं कि हूबहू कल्प पहले (मिसल) हो रहा है। जो अक्षर गाए हुए हैं, वो बरोबर प्रैक्टिकल में अभी हो रहे हैं। अबलाओं के ऊपर भी अत्याचार होते हैं। कचरा भी, बोलते हैं ना– असुर कचरा डालेगा। तो कचरे भी देखो कितने डालते हैं, विघ्न डालते हैं। हो सकता है कोई भी समय में आ करके इन सबको आग भी लगा दे, देरी नहीं लगती है बच्चों को। अरे, ये तो जो भी पुलिस के घरों को और बसों को और एम्बेसिडर के इतने महलों को और फलाने को भी पत्थर मारकर तोड़–फोड़ देते हैं, सो तुम्हारे चित्र क्या हैं! वो तो देरी नहीं लगेगी। हो भी सकता है कोई भी समय में। तो भी क्या भला, चित्र फाड़ेगा, ये करेगा, हम क्या कहेंगे! भावी, बस। हम वहाँ धामधूम करेंगे, गवर्मेण्ट के पिछाड़ी यहाँ–वहाँ; पर दिल में अंदर में, देखो बाहर से कर्म करेगा वही... अंदर में कहेगा– ये तो कल्प पहले भी ऐसा हुआ होगा। इसलिए कोई भी दुःख की कोई बात नहीं। नुकसान हुआ, अच्छा चलो अब कौन, भरकर तो कोई नहीं देगा। अच्छा चलो, ये सब सो हो गया। अच्छा, धोबी के घर से गई छू। फिर से बनाए लेंगे। बात तो कोई नहीं है ना। बाबा ने कई दफा कहा है कि जहाँ–2 प्रदर्शनी अभी करते हो; क्योंकि कहते तो रहते हैं ना, कोई–न–कोई दुश्मन (...)। अभी देखो कहते हैं ना, वो बोलता– हम जला देंगे, ये करेंगे। अच्छा, जब वहाँ डर है, तो इन्श्योर करने की कोशिश करो। भई अगर आठ रोज़ का है, आठ रोज़ का इन्श्योर करो। वो तो जो उनकी चार्ज होगी वो माँगेंगे। कोई अच्छा होगा बहुत तो कम भी ले लेंगे। जान–पहचान से कोई कम भी ले सकते हैं। ऐसे भी होता है। तो कोई वक्त में आग लगी तो चलो, नहीं तो इन्श्योर तो होता ही है। सब इन्श्योर करते रहते हैं, कोई मिलता कुछ थोड़े ही है। कभी एक खखरा भी नहीं मिलता है इन्श्योरेन्स का। आग भी नहीं लगती है तो पीछे इन्श्योरेन्स काहे की होगी! खर्चा बढ़ता ही रहता है। कभी भी आग नहीं लगती है। भले धंधे समेट भी जाते हैं, कभी आग ही नहीं लगती है। तो जब देखते हैं कि नहीं, ऐसे–2 कुछ समय देखने में आते हैं, जो इन्श्योर भी कर सकते हैं। न इन्श्योर किया तो भी क्या होगा! चित्र जाएँगे .... नुकसान कर देंगे। तो भी कहा जाता है– खत्ती के घर से गई छू; क्योंकि फिर तो बाप है ना। ड्रामा में नूँध तो है ना सब बात की, जो भी होगा वही नूँध। फिर भी कोई नए चित्र बनेंगे, सबको और ही अच्छे बनेंगे। पुरानी बिल्डिंग खलास होती है, तो फिर नई बिल्डिंग अच्छी बनती है। ये चित्र खतम हो गए तो और ही शायद इनसे भी अच्छे चित्र बनें, गुलगुल बनें बहुत, बड़े–2 भी बहुत बनें। तो जिस बात में, जो कदम–2 पर पदम। इसको कहा ही जाता है–कदम–2 पर पदम। तुम्हारा कदम–2 यानी सेकेण्ड–2 तुम पदमपति बनते रहते हो। पदमपति या अनगिनत, इतना तुम बच्चों को 21 जन्मों के लिए बाप से वर्सा मिलता है। तो कितना अच्छी तरह से समझना चाहिए, समझाना चाहिए। ये गाया जाता है कदम–2 पर पदम यानी जो सेकेण्ड गुजरता है, अभी पैदल की तो बात नहीं है ना और जो अच्छी तरह से तुम पढ़ते रहते हो पढ़ाई, अरे ये तो अनगिनत पैसे। वहाँ–2 गिनती होती नहीं बच्चे। इसके पास इतने मिलियन पाउण्ड्स हैं या इतना मिलियन, वन थाउजेंड मिलियन, टेन थाउजेंड मिलियन।...मिलियन–विलियन की कुछ बात ही नहीं होती है वहाँ। वहाँ

अनगिनत होती है सब बात (में)। इतना देखो बाप आ करके तुमको सुखी और साहूकार बनाते हैं। धन से तो सुख होता है ना। तो यहाँ क्या बैठ करके करते हो! पाठशाला का मतलब सोर्स ऑफ इनकम, ठीक! तो देखो, ये पाठशाला है, सोर्स ऑफ इनकम कितनी बड़ी है। है तो पाठशाला ना। तुम देखो, इतनी सोर्स ऑफ इनकम, तो देखो क्या बनते हो। पूजा भी कितनी साहूकार! अच्छा चलो बच्ची, टोली ले आओ। इनकम फोर फ्यूचर 21 जनरेशन, सो तो होगा ही स्वर्ग में। पढ़ाई है पाठशाला गीता की। पाठशाला में है सोर्स ऑफ इनकम और पाठशाला पूरी है, मनुष्य से देवता बनने की। सो तो हुआ स्वर्ग में बनने की। तो ये तो सोर्स ऑफ इनकम, सो भी पढ़ाता देखो कौन है? बाप पढ़ाते हैं बच्चों को। स्वर्ग की इनकम कुछ कम है! तो बस, पढ़ाई समझो। जबकि पढ़ाई है, इतनी इनकम है, फिर पूरे क्यों नहीं पढ़ते हैं? गफलत क्यों करते हैं पढ़ाई में? (किसी ने कुछ कहा) ..... प्रदर्शनी भी पाठशाला है, पाठशाला में हैं ये मैप्स जैसे। तो ये जो मकान है बैंक वाला, है बहुत अच्छा पाठशाला का लायक, बड़े–2 आदमी भी आय सकते हैं। सिर्फ कोई प्रबंध रखो जो फिर बच्चे बाजू में होवें। कुछ वहाँ भी रहें और कुछ बाजू में रहें– ऐसा कोई प्रबंध करो। तो भी हर्जा नहीं है। पीछे भी ले सकते हो। तभी तो उनको समझाया जा सकता है कि ये दैवी राजस्थान था और पीछे आसुरी राजस्थान, सिंगल ताज। पहले डबल ताज राजस्थान था, सिंगल ताज, अभी नो ताज स्थान। अभी फिर ये डबल सिरताज राजस्थान बन रहा है, आ करके समझो। ऐसे भी तुम लिख सकते हो, है ना– ये राजस्थान दैवी राजस्थान था। इसमें श्री लक्ष्मी–नारायण का राज्य था। ये तो लक्ष्मी–नारायण तो भारत का ही था; परन्तु उसमें राजस्थान भी पावन आते हैं ना। पीछे ये सभी राजाएँ मल्टीप्लीकेशन में आ करके आए हैं ना। तो खुश होंगे। ये राजस्थान था, 84 जन्म के बाद अब ये कब्रिस्तान हो गया है ...। ये देखो, मन्मनाभव, मद्याजीभव। बाप को याद करो, ये फिर महाराजा–महारानी बनो। है बड़ी सिम्पल बात। अच्छा! मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।

कोई चीज़ चाहिए यहाँ से, प्रदर्शनी तो है। तुम जा करके सिर्फ ये देख आऊँगी, परवाह क्या, 150 रुपया खर्चा होगा। (किसी ने कुछ कहा) समझा ना। खर्चे का तो कोई परवाह ही नहीं है। तो वो देखने में तो हाँ वही–2 सब कुछ भी हमारे पास होना चाहिए, जब प्रदर्शनी की जाती है तो। तो ये सुना है शायद नहीं है; परन्तु अच्छी हिस्ट्री लिखी है। सो भी बनाया है, मैदान में बनाया है। बड़ा मण्डप, जबरदस्त मण्डप बनाया है। बाबा जब सुनते हैं, बोलता है ना– एक/दो का देखने लायक है। मेरे को कल आया था कि इनको कहूँ झट– जाओ, एक फ्लाइंग वीजिट क्या है, पैसे की तो कोई हर्जा नहीं है, अनुभव पा जाएँगे। तो अभी भी अगर जाओ तो कल खलास होने का है शायद। (किसी ने कहा– दो तारीख) आज क्या तारीख है? (किसी ने कहा– पहली तारीख) पहली। अभी भी..में मगज पूर होता है। नशा चढ़ता है। रास तो है नहीं। तो ध्यान में रहता है सब– ये होना चाहिए, ये होना चाहिए। कुछ–न–कुछ समझ लेंगे। सुबह को पहुँचेंगे, सारा दिन तो होगा ना। (किसी ने कहा–हाँ जी) हो सके तो फ्लाइंग...। फ्लाइंग वीजिट आजकल,...देखो ये गवर्मेण्ट... आज यहाँ, कल जयपुर में, पहले इलाहाबाद में, फलाना यहाँ देखो कैसे। तो तुम कोई कम थोड़े ही हो, बड़े–ते–बड़ा ऑफिसर हो जबरदस्त और बाबा डायरेक्शन देते हैं। खर्चा तो सभी गवर्मेण्ट का होता है। गवर्मेण्ट खर्चा देने के लिए तैयार रहती है। जो सर्विसेबुल हैं अच्छे–अच्छे। मीठे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग।